Pro

Chapter 21

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	פַּלְגֵי־	מַיִם	לֵב־	מֶלֶךְ	בְּיַד־	יְהוָה	עַל־	כֹּל־	אֲשֶׁר	יַחְפֹּץ	יַטֶּנּוּ׃
	धाराएं-	जल-की	हृदय-	राजा-का	हाथ-में-	यहोवा-के	पर-	सब-	जहां	चाहता-है	मोड़ता-है-उसे
	H6388	H4325		H4428	H3027	H3068		H3605			H5186

राजाओं का मन यहोवा के हाथ होता, जहाँ भी वह चाहता उसको मोड़ देता है वैसे ही जैसे कोई कृषक पानी खेत का।

2	כָּל־	דֶּרֶךְ־	אִישׁ	יָשָׁר	בְּעֵינָיו	וְתֹכֵן	לִבּוֹת	יְהוָה׃
	सब-	मार्ग-	मनुष्य-का	सीधा	आंखों-अपनी-में	परंतु-जांचनेवाला	हृदयों-को	यहोवा
	H3605	H1870	H0376	H3477		H8505	H3826	H3068

सबको अपनी—अपनी राहें उत्तम लगती हैं किन्तु यहोवा तो मन को तौलता है।

3	עֲשֹׂה	צְדָקָה	וּמִשְׁפָּט	נִבְחָר	לַיהוָה	מִזָּבַח׃
	करना	धार्मिकता	और-न्याय	चुना-हुआ	यहोवा-के-लिए	बलिदान-से-अधिक
		H6666	H4941	H0977	H3068	H2077

तेरा उस कर्म का करना जो उचित और नेक है यहोवा को अधिक चढ़ावा चढ़ाने से ग्राह्य है।

4	רוּם־	עֵינַיִם	וּרְחַב־	לֵב	נֵר	רְשָׁעִים	חַטָּאת׃
	घमंड-	आंखों-की	और-चौड़ाई-	हृदय-की	दीपक	दुष्टों-का	पाप
	H7312		H7342		H5215	H7563	

गर्वीली आँखें और दर्पीला मन पाप हैं ये दुष्ट की दुष्टता को प्रकाश में लाते हैं।

5	מַחְשְׁבוֹת	חָרוּץ	אַךְ־	לְמוֹתָר	וְכָל־	אָץ	אַךְ־	לְמַחְסוֹר׃
	योजनाएं	परिश्रमी-की	केवल-	लाभ-के-लिए	परंतु-सब-	जल्दबाज	केवल-	घाटे-के-लिए
	H4284		H0389	H4195	H3605	H0213	H0389	

परिश्रमी की योजनाएँ लाभ देती हैं यह वैसे ही निश्चित है जैसे उतावली से दरिद्रता आती है।

6	פֹּעַל	אוֹצָרוֹת	בִּלְשׁוֹן	שֶׁקֶר	הֶבֶל	נִדָּף	מְבַקְשֵׁי־	מָוֶת׃
	कमाना	खजाने	जीभ-से-	झूठ-की	व्यर्थ	उड़ती-हुई	खोजनेवालों-	मृत्यु
	H6467	H0214	H3956	H8267	H1892	H5086	H1245	H4194

झूठ बोल—बोल कर कमाई धन दौलत भाप सी अस्थिर है, और वह घातक फंदा बन जाती है।

7	שֹׁד־	רְשָׁעִים	יְגוֹרֵם	כִּי	מֵאֲנוּ	לַעֲשׂוֹת	מִשְׁפָּט׃
	लूट-	दुष्टों-की	खींचेगी-उन्हें	क्योंकि	इन्कार-किया	करना	न्याय
	H7701	H7563	H1641		H3985		H4941

दुष्ट की हिंसा उन्हें खींच ले डूबेगी क्योंकि वे उचित कर्म करना नहीं चाहते।

8	הַפַּכְפַּךְ	דֶּרֶךְ	אִישׁ	וְזָר	וְזַךְ	יָשָׁר	פָּעֳלוֹ׃
	टेढ़ा	मार्ग	मनुष्य-का	और-अजनबी	परंतु-शुद्ध	सीधा	कार्य-उसका
	H2019	H1870	H0376	H2054	H2134	H3477	H6467

अपराधी का मार्ग कुटिलता — पूर्ण होता है किन्तु जो सज्जन हैं उसकी राह सीधी होती हैं।

9	טוֹב	לָשֶׁבֶת	עַל־	פִּנַּת־	גָּג	מֵאֵשֶׁת	מִדְיָנִים	וּבֵית	חָבֶר׃
	उत्तम	बैठना	पर-	कोने-	छत-के	पत्नी-से-	झगड़ालू	और-घर	साझे-के
		H3427		H6438	H1406	H0802	H4079		H2267

झगड़ालू पत्नी के संग घर में निवास से, छत के किसी कोने पर रहना अच्छा है।

10

נֶפֶשׁ	רָשָׁע	אִוְּתָה־	רָע	לֹא־	יֻחַן	בְּעֵינָיו	רֵעֵהוּ׃
प्राण	दुष्ट-की	चाहती-है-	बुराई	नहीं-	दया-दिखाई-जाती-है	आंखों-उसकी-में	पड़ोसी-उसके
H5315	H7563	H0183		H3808			H7453

दुष्ट जन सदा पाप करने को इच्छुक रहता, उसका पड़ोसी उससे दया नहीं पाता।

11

בַּעְנָשׁ־	לֵץ	יֶחְכַּם־	פֶּתִי	וּבְהַשְׂכִּיל	לְחָכָם	יִקַּח־	דָּעַת׃
दंड-देने-पर-	ठट्ठे-को	बुद्धिमान-होता-है-	भोला	और-समझदार-करने-पर	बुद्धिमान-को	प्राप्त-करता-है-	ज्ञान
H6064	H3887	H2449			H2450	H3947	H1847

जब उच्छृंखल दण्ड पाता है तब सरल जन को बुद्धि मिल जाती है; किन्तु बुद्धिमान तो सुधारे जाने पर ही ज्ञान को पाता है।

12

מַשְׂכִּיל	צַדִּיק	לְבֵית	רָשָׁע	מְסַלֵּף	רְשָׁעִים	לָרָע׃
ध्यान-देनेवाला	धर्मी	घर-पर	दुष्ट-के	उलटनेवाला	दुष्टों-को	बुराई-के-लिए
	H6662		H7563	H5557	H7563	

न्यायपूर्ण परमेश्वर दुष्ट के घर पर आँख रखता है, और दुष्ट जन का वह नाश कर देता है।

13

אֹטֵם	אָזְנוֹ	מִזַּעֲקַת־	דָּל	גַּם־	הוּא	יִקְרָא	וְלֹא	יֵעָנֶה׃
बंद-करनेवाला	कान-अपना	चिल्लाहट-से-	गरीब-की	भी-	वह	पुकारेगा	परंतु-नहीं	उत्तर-दिया-जाएगा
H0331	H0241	H2201	H1800	H1571	H1931	H7121	H3808	

यदि किसी गरीब की, करुणा पुकार पर कोई मनुष्य निज कान बंद करता है, तो वह जब पुकारेगा उसकी पुकार भी नहीं सुनी जायेगी।

14

מַתָּן	בַּסֵּתֶר	יִכְפֶּה־	אָף	וְשֹׁחַד	בַּחֵק	חֵמָה	עַזָּה׃
भेंट	गुप्त-में	शांत-करती-है-	क्रोध	और-घूस	गोद-में	जोश	प्रचंड
H4976		H3711	H0639	H7810	H2436	H2534	H5794

गुप्त रुप से दिया गया उपहार क्रोध को शांत करता, और छिपा कर दी गई घूंस भंयकर क्रोध शांत करती है।

15

שִׂמְחָה	לַצַּדִּיק	עֲשׂוֹת	מִשְׁפָּט	וּמְחִתָּה	לְפֹעֲלֵי	אָוֶן׃
आनंद	धर्मी-के-लिए	करना	न्याय	परंतु-विनाश	करनेवालों-के-लिए	पाप
H8057	H6662		H4941	H4288	H6466	H0205

न्याय जब पूर्ण होता धर्मी को सुख होता, किन्तु कुकर्मियों को महा भय होता है।

16

אָדָם	תּוֹעֶה	מִדֶּרֶךְ	הַשְׂכֵּל	בִּקְהַל	רְפָאִים	יָנוּחַ׃
आदमी	भटकता-हुआ	मार्ग-से	समझ-के	सभा-में	मृतकों-की	विश्राम-करेगा
H0120	H8582	H1870		H6951	H7496	H5117

जो मनुष्य समझ—बूझ के पथ से भटक जाता है, वह विश्राम करने के लिये मृतकों का साथी बनता है।

17

אִישׁ	מַחְסוֹר	אֹהֵב	שִׂמְחָה	אֹהֵב	יַיִן־	וָשֶׁמֶן	לֹא	יַעֲשִׁיר׃
मनुष्य	घाटेवाला	प्रेमी	आनंद-का	प्रेमी	दाखरस-	और-तेल-का	नहीं	धनी-होगा
H0376	H4270	H0157	H8057	H0157	H3196	H8081	H3808	H6238

जो सुख भोगों से प्रेम करता रहता वह दरिद्र हो जायेगा, और जो मदिरा का प्रेमी है, तेल का कभी धनी नहीं होगा।

18

כֹּפֶר	לַצַּדִּיק	רָשָׁע	וְתַחַת	יְשָׁרִים	בּוֹגֵד׃
फिरौती	धर्मी-के-बदले	दुष्ट	और-जगह-में	सीधों-के	विश्वासघाती
	H6662	H7563	H8478	H3477	H0898

दुर्जन को उन सभी बुरी बातों का फल भुगतना ही पड़ेगा, जो सज्जन के विरुद्ध करते हैं। बेईमान लोगों को उनके किये का फल भुगतना पड़ेगा जो इमानदार लोगों के विरुद्ध करते है।

19

טוֹב	שֶׁבֶת	בְּאֶרֶץ־	מִדְבָּר	מֵאֵשֶׁת	[מדונים]	(מִדְיָנִים)	וָכָעַס׃
उत्तम	बैठना	भूमि-में-	जंगल-की	पत्नी-से-	[झगड़ालू]	(झगड़ालू)	और-क्रोधी
	H3427	H0776		H0802	H4066	H4066	

चिड़चिड़ी झगड़ालू पत्नी के संग रहने से निर्जन बंजर में रहना उत्तम है।

20

יְבַלְּעֶנּוּ׃	אָדָם	וּכְסִיל	חָכָם	בִּנְוֵה	וָשֶׁמֶן	נֶחְמָד	אוֹצָר
निगल-जाता-है-उसे	मनुष्य	परंतु-मूर्ख	बुद्धिमान-के	निवास-में	और-तेल	बहुमूल्य	खजाना
H1104	H0120	H3684	H2450		H8081		H0214

विवेकी के घर में मन चीते भोजन और प्रचुर तेल के भंडार भरे होते हैं किन्तु मूर्ख व्यक्ति जो उसके पास होता है, सब चट कर जाता है।

21

וְכָבוֹד׃	צְדָקָה	חַיִּים	יִמְצָא	וָחָסֶד	צְדָקָה	רֹדֵף
और-आदर	धार्मिकता	जीवन	पाएगा	और-दया	धार्मिकता	पीछा-करनेवाला
H3519	H6666		H4672		H6666	H7291

जो जन नेकी और प्रेम का पालन करता है, वह जीवन, सम्पन्नता और समादर को प्राप्त करता है।

22

מִבְטֶחָה׃	עֹז	וַיֹּרֶד	חָכָם	עָלָה	גִּבֹּרִים	עִיר
भरोसे-उसके	बल	और-गिरा-दिया	बुद्धिमान	चढ़ा	वीरों-का	नगर
H4009	H5797	H3381	H2450	H5927	H1368	

बुद्धिमान जन को कुछ भी कठिन नहीं है। वह ऐसे नगर पर भी चढ़ायी कर सकता है जिसकी रखवाली शूरवीर करते हों, वह उस परकोटे को ध्वस्त कर सकता है जिसके प्रति वे अपनी सुरक्षा को विश्वस्त थे।

23

נַפְשׁוֹ׃	מִצָּרוֹת	שֹׁמֵר	וּלְשׁוֹנוֹ	פִּיו	שֹׁמֵר
प्राण-अपने	संकटों-से	रखता-है	और-जीभ-अपनी	मुख-अपना	रखनेवाला
H5315		H8104	H3956	H6310	H8104

वह जो निज मुख को और अपनी जीभ को वश में रखता वह अपने आपको विपत्ति से बचाता है।

24

זָדוֹן׃	בְּעֶבְרַת	עוֹשֶׂה	שְׁמוֹ	לֵץ	יָהִיר	זֵד
अहंकार-के	औंधड-में	करनेवाला	नाम-उसका	ठट्ठा	घमंडी	अहंकारी
H2087	H5678		H8034	H3887	H3093	H2086

ऐसे मनुष्य अहंकारी होता, जो निज को औरों से श्रेष्ठ समझता है, उस का नाम ही “अभिमानी” होता है। अपने ही कर्मो से वह दिखा देता है कि वह दुष्ट होता है।

25

לַעֲשׂוֹת׃	יָדָיו	מֵאֲנוּ	כִּי־	תְּמִיתֶנּוּ	עָצֵל	תַּאֲוַת
काम-करने	हाथ-उसके	इन्कार-करते-हैं	क्योंकि-	मारती-है-उसे	आलसी-की	इच्छा
	H3027	H3985		H4191	H6102	H8378

आलसी पुरूष के लिये उसकी ही लालसाएँ उसके मरण का कारण बन जाती हैं क्योंकि उसके हाथ कर्म को नहीं अपनाते।

26

יַחְשֹׂךְ׃	וְלֹא	יִתֵּן	וְצַדִּיק	תַאֲוָה	הִתְאַוָּה	הַיּוֹם	כָּל־
रोकता-है	और-नहीं	देता-है	परंतु-धर्मी	लालच-में	लालच-करता-है	दिन	सारे-
H2820	H3808	H5414	H6662	H8378	H0183	H3117	H3605

दिन भर वह चाहता ही रहता यह उसको और मिले, और किन्तु धर्मी जन तो बिना हाथ खींचे देता ही रहता है।

27

יְבִיאֶנּוּ׃	בְזִמָּה	כִּי־	אַף	תּוֹעֵבָה	רְשָׁעִים	זֶבַח
लाता-है-उसे	दुष्ट-इरादे-से	जब-	कितना-अधिक	घृणा	दुष्टों-का	बलिदान
H0935	H2154		H0637	H8441	H7563	H2077

दुष्ट का चढ़ावा यूँ ही घृणापूर्ण होता है फिर कितना बुरा होगा जब वह उसे बुरे भाव से चढ़ावे

28

יְדַבֵּר׃	לָנֶצַח	שׁוֹמֵעַ	וְאִישׁ	יֹאבֵד	כְּזָבִים	עֵד־
बोलेगा	सदा-के-लिए	सुननेवाला	परंतु-मनुष्य	नाश-होगा	झूठा	साक्षी-
H1696	H5331	H8085	H0376	H0006	H3577	H5707

झूठे गवाह का नाश हो जायेगा; और जो उसकी झूठी बातों को सुनेगा वह भी उस ही के संग सदा सर्वदा के लिये नष्ट हो जायेगा।

29									
	הֵעֵ֬ז	אִ֣ישׁ	רָשָׁ֣ע	בְּפָנָ֑יו	וְ֝יָשָׁ֗ר	ה֤וּא ׀	[יכין]	(יָבִ֬ין)	[דרכיו]
	कठोर-करता-है	मनुष्य	दुष्ट	मुख-अपने-में	परंतु-सीधा	वह	[स्थिर-करता-है]	(समझता-है)	[मार्गों-अपने]
	H5810	H0376	H7563	H6440	H3477	H1931		H0995	H1870
	(דַּרְכּֽוֹ׃)								
	(मार्ग-अपना)								
	H1870								

> सज्जन तो निज कर्मो पर विचार करता है किन्तु दुर्जन का मुख अकड़ कर दिखाता है।

30									
	אֵ֣ין	חָ֭כְמָה	וְאֵ֣ין	תְּבוּנָ֑ה	וְאֵ֥ין	עֵ֝צָ֗ה	לְנֶ֣גֶד	יְהוָֽה׃	פ
	नहीं-है	बुद्धि	और-नहीं-है	समझ	और-नहीं-है	सलाह	सामने	यहोवा-के	प
	H0369	H2451	H0369	H8394	H0369	H6098	H5048	H3068	

> यदि यहोवा न चाहें तो, न ही कोई बुद्धि और न ही कोई अन्तर्दृष्टि, न ही कोई योजना पूरी हो सकती है।

31						
	ס֗וּס	מ֭וּכָן	לְי֣וֹם	מִלְחָמָ֑ה	וְ֝לַֽיהוָ֗ה	הַתְּשׁוּעָֽה׃
	घोड़ा	तैयार	दिन-के-लिए	युद्ध-के	परंतु-यहोवा-से	उद्धार
			H3117	H4421	H3068	H8668

> युद्ध के दिन को घोड़ा तैयार किया है, किन्तु विजय तो बस यहोवा पर निर्भर है।